DATE : 18-04-2020

Sub. Code :- EPC - 4

Asst. Prof. - Brijesh Singh

EPC 4 : B.ed 2 स्वयं की समझ

6 Tuesday
JANUARY

(1) 006-359 Week 2

स्वयं का विकास एवं प्रबंधन : अपने आप का विकास एवं प्रबंधन करना

यह इकाई किस बारे में है

भारत के विद्यालयों को छात्रों के सीखने के उत्कृष्टता केन्द्रों में बदलने के स्वप्न को सच करने के लिए आवश्यक है कि विद्यालय प्रमुख अपने संपूर्ण कार्य जीवन में अपने कौशलों और ज्ञान का नवीकरण और अद्यतन करने का निजी दायित्व लें। क्योंकि, वे ही इस आन्दोलन के केन्द्र बिन्दु है। व्यक्तिगत विकास आपके कौशलों और ज्ञान को विकसित करने, आकार देने और सुधार करने की जीवन-पर्यंत प्रक्रिया है ताकि वह विद्यालय की कार्य क्षेत्र में अधिकतम प्रभावकारिता और सकारात्मक आत्म अवधारणा का विकास सुनिश्चित किया जा सके। व्यक्तिगत विकास का मतलब आवश्यक रूप से ऊर्ध्वगामी गति ही नहीं होता। बल्कि, इसका मतलब अपने विद्यालय का नेतृत्व करने में अपने कार्य-प्रदर्शन का सुधार करने में आपको सक्षम करना है।

स्वयं को करने के महत्त को नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन (NUEPA) द्वारा 2014 में प्रकाशित नेशनल प्रोग्राम डिजाइन एंड करिकुलम फ्रेमवर्क में छह मुख्य क्षेत्रों में से एक के रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसे भारत में विद्यालयों का रुपांतरण

2009

और विद्यालय प्रमुखों का व्यावसायिक विकास संभव करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके लिए प्रत्येक विद्यालय प्रमुख में आत्म-विकास और संस्थागत विकास के लक्ष्यों के बीच सामंजस्य की जरूरत है।

सीखने की डायरी

इस इकाई में काम करते समय आपसे अपनी सीखने की डायरी एक किताब या फोल्डर है। जहाँ आप अपने विचारों और योजनाओं को एकत्र करते है। संभवतः आपने अपनी डायरी भरना शुरु कर दिया होगा।

इस इकाई में आप अकेले काम कर सकते है, लेकिन यदि आप अपने सीखने की चर्चा किसी अन्य विद्यालय प्रमुख के साथ कर सके तो आप और भी अधिक सीखेगें। यह कोई सहकर्मी हो सकता है जिसके साथ आप नए संबंध का निर्माण करना चाहते है। इसे नियोजित ढग से या अधिक अनौपचारिक आधार पर किया जा सकता है। आपकी सीखने की डायरी में बनाए गए आपके नोट्स इस प्रकार की बैठकों के लिए उपयोगी होंगे. और साथ ही आपकी दीर्घावधि की श्री शिक्षण-प्रक्रिया और विकास का प्रतिचित्रण भी करेंगे।

क्या आपके पास अपनी भूमिका के लिए काम का विवरण है? यदि नहीं, तो उन सब कामों की सूची दें जो आपको को हाथ में लेना और पूरा करना है। कुछ को तत्काल करना हो सकता है, जबकि अन्य काम दीर्घावधि प्रकृति के हो सकते हैं।

आपकी दैनिक गतिविधि सूची आपके अ काम के विवरण या काम की सूची को कितने सटीक ढंग से प्रस्तुत करती है? क्या आप ऐसी कोई गतिविधियाँ करते हैं जो व्यवसाय के विवरण या नौकरी की सूची में नहीं दी गई हैं?

विद्यालय प्रमुख बनने का काम काफी जिम्मेदारी भरा होता है। विद्यालय प्रमुख के काम का एक बड़ा हिस्सा अन्य लोगों को आपकी ओर से काम करने में समर्थ बनाना होता है। इसमें शामिल है:

- दिशा प्रदान करना
- अच्छी शिक्षण पद्धतियां निश्चित करना
- कार्य निष्पादन का प्रबंधन करना
- अन्य लोगों के काम करने का समर्थन करना
- सुनिश्चित करना कि आपका स्टाफ प्रेरित बना रहे, उनको दिया गया काम पूरा करे, और व्यावसायिक / वृत्तिक स्तर बनाए रखे।

मानव जीवन का उद्देश्य

यह बड़ी अजीब बात है कि लोगों के सोच और उनके कर्म में कितना अन्तर होता है। वहीं यह बात भी सर्वमान्य है की कर्म सोच का ही परिमार्जित रूप होता है। फिर इस दोहरे मानदंड का अर्थ क्या है? ऐसी कौन सी अवस्थाएँ हैं जो लोगों को उनके उद्देश्य से भटका देतीं हैं, अंतरात्मा की आवाज़ को दबा देतीं हैं? इस बात को स्पष्ट करने के लिए मानव जीवन का एक सुक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है।

अब तक यह बात सर्वमान्य रही है कि एक शक्ति है जो सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड को नियंत्रित एवम् संचालित करती है। उसे चाहे ईश्वर नाम दें या प्रकृति। यही बात पृथ्वी और इसपर उपस्थित सभी जीवधारियों पर भी लागू होती है। यद्यपि कि हमारे अन्वेषण का केंद्र बिंदु मानव जीवन और उसकी प्रकृत्ति है तथापि एक नियम या प्रवृत्ति समस्त जीवधारियों मे सामान है और वह है अपने अस्तित्व को बनाए रखने की प्रवृत्ति। जाने अनजाने सभी जीवनधारी अपने तथा अपने समुदाय का अस्तित्व बनाए रखने का हर सम्भव प्रयास करते है और यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि पृथ्वी पर उन्हीं जीवनधारियों का अस्तित्व शेष बचा है, जिन्होने वातावरण के अनुकूल स्वयं को ढालने के लिए संघर्ष किया और अपने समुदाय को भी इसके लिए

प्रेरित किया अर्थात जीवन का संघर्ष ही एक ऐसी प्रवृत्ति है जो सभी जीवधारियों में एक सामान है। मानव जीवन जिसे मनुष्य को विधाता का दिया हुआ सर्वोत्तम उपहार कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि कोई व्यक्ति तभी महान बनता है जब वह अपनी महानता के चरम पर पहुँचने तक जीवित रहे। महानता तो वह कसौटी है जिसपर महान व्यक्ति हर समय - विसम परिस्थितियों में स्वयं को खरा उतारता अर्थात जीवन ही मनुष्य को महान बनने का अवसर प्रदान करता है

2